Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Free Course

https://chitrabazar.com/ras-foundation-course-free-rpsc/

संविधान की शक्ति के स्रोत नोट्स

संविधान की शक्ति मूलभूत सिद्धांतों, कानूनी प्रावधानों, ऐतिहासिक संदर्भ और लोगों की इच्छा के संयोजन से उत्पन्न होती है। आइए उन प्रमुख स्रोतों का पता लगाएं जो संविधान के अधिकार और प्रभाव में योगदान करते हैं:

1. लोकप्रिय जनादेश: संविधान अपनी शक्ति लोगों के जनादेश से प्राप्त करता है। यह नागरिकों की सामूहिक इच्छा और आकांक्षाओं का प्रतीक है, जिन्होंने संविधान सभा के माध्यम से इसकी पुष्टि की।

2. कानूनी प्राधिकरण: संविधान देश का सर्वोच्च कानून है, जो शासन के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है और सरकार की संरचना स्थापित करता है। यह संस्थानों को कानूनी अधिकार प्रदान करता है, उनके कार्यों को रेखांकित करता है और नागरिकों के अधिकारों और जिम्मेदारियों की रूपरेखा तैयार करता है।

3. मौलिक अधिकार और निदेशक सिद्धांत: संविधान मौलिक अधिकारों के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाता है, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सुरक्षा की गारंटी देता है। यह सामाजिक न्याय और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सरकार का मार्गदर्शन करते हुए राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों की भी रूपरेखा तैयार करता है।

4. शक्तियों का पृथक्करण: संविधान सरकार की तीन शाखाओं-विधायी, कार्यकारी और न्यायिक-के बीच शक्तियों का आवंटन करता है, जिससे जाँच और संतुलन की व्यवस्था सुनिश्चित होती है। यह पृथक्करण शक्ति के संकेंद्रण को रोकता है और संभावित दुरुपयोग से बचाता है।

5. न्यायिक समीक्षा: संविधान न्यायपालिका को कानूनों और सरकारी कार्यों की संवैधानिकता की समीक्षा करने का अधिकार देता है। यह प्राधिकरण सुनिश्चित करता है कि सरकार के कार्य संविधान के सिद्धांतों का पालन करें।

6. संशोधन: संविधान में अपने स्वयं के संशोधन के प्रावधान शामिल हैं, जो बदलते समय के अनुकूल होने के लिए आवश्यक लचीलेपन को दर्शाते हैं। हालाँकि, संविधान के मूल मूल्यों को संरक्षित करने के लिए संशोधन कुछ सीमाओं के अधीन हैं।

7. प्रस्तावना: संविधान की प्रस्तावना इसके उद्देश्यों और मूल मूल्यों को रेखांकित करती है। हालाँकि यह अपने आप में कानूनी रूप से लागू करने योग्य नहीं है, फिर भी प्रस्तावना संविधान के प्रावधानों की व्याख्या के लिए एक मार्गदर्शक दर्शन प्रदान करती है।

8. बुनियादी संरचना सिद्धांत: न्यायपालिका द्वारा स्थापित सिद्धांत, यह दावा करता है कि संविधान के कुछ बुनियादी सिद्धांतों में संशोधन नहीं किया जा सकता है। यह सिद्धांत संविधान की आवश्यक विशेषताओं को मनमाने परिवर्तनों से सुरक्षित रखता है।

9. ऐतिहासिक संदर्भ: संविधान भारत के ऐतिहासिक संदर्भ से प्रभावित है, जिसमें स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, स्वतंत्रता आंदोलन और उस समय की सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताएं शामिल हैं। ये ऐतिहासिक कारक संविधान की मंशा और प्रावधानों को आकार देते हैं।

10. कानून का शासन: संविधान कानून के शासन के सिद्धांत को स्थापित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी अधिकारियों सहित सभी व्यक्ति कानून के अधीन हैं और इसके तहत जवाबदेह हैं।

11. अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ और सम्मेलन: संविधान की शक्ति भारत द्वारा अनुमोदित अंतर्राष्ट्रीय संधियों और सम्मेलनों तक विस्तारित हो सकती है। यदि इन समझौतों के लिए घरेलू कानून की आवश्यकता होती है, तो संविधान उनके निगमन के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।